'काशी' सांगीतिकनगरीपर्यटन की दृष्टि से

रूचि मिश्रा
शोध छात्राए गायन विभाग, संगीत एवं मंचकला संकाय
काशी हिन्द ू विश्वविद्यालय ए वाराणसी

भारतवर्ष के कुछ ही नगर ऐसे हैं, जो व्यक्ति–विशेष, वस्तु–विशेष एवं संस्कृति विशेष के कारण सदियों से अलग पहचाने जाते रहे हैं।काशी नगरी को यह गौरव प्राप्त है।इसकी संस्कृति, कला, धर्म, दर्शन, गुण, चरित्र, विचार एवं संगीत–परंपरा का मनो मुग्धकारी तथा अपराजेय इतिहास क्षणमात्र में मान सपटल पर अंकित हो उठता है।काशी नगरी प्राचीन काल से ही संगीतनगरी के रूप में विख्यात रही है।

यहाँ संगीत की समुन्नति के लिए शिक्षालयों की राज्य की ओर से व्यवस्था का वर्णनबौद्ध–ग्रंथों की जातक कथाओं मे ंप्राप्त होता है। आमोद–प्रमोद की विभिन्न कलात्मकत परम्परा के संदर्भ मे ंइस नगर की दैनिक दिनचया र्में धार्मिक आस्था, वाणी की उदारता, शास्त्राथ र्पटुता, लेखनपटुता में निर्भिकता, संस्कृति, परंपरा, देश प्रेम, आस्था, निःशुल्क विद्यादान, गोदान, अन्नदान, संकटकालीन स्थितियों में उदारता की पराकाष्ठा आदिचारित्रिक, धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृति क गुणों से ओतप्रोत इस नगर की गतिशीलता अन्य नगरों से सर्वथाभिन्न रही है।

यहाँ के घाटों और मन्दिरों में होने वाले सांगीतिक आयोजनों ने इस नगरी की जीवन्तता को बनाये रखने मे ंसदैव ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाइ र्है। इन्ही ंसांस्कृतिक गतिविधिया ंऔर कार्यक्रमों के कारण काशी नगरी में पर्यटन व्यवसाय को और बढ़ावा मिल सका।इस नगरी में आयोजित होने वाले कार्यक्रमा ंमें" बुढ़वा–मंगल "और" गुलाब–बाड़ी", ध्रुपदमेला, संकटमोचन संगीत समारोह, सुबह ए बनारस, महामृत्युंजय महोत्सव, व्यास महोत्सव आदि विशेष हैं।इन विशेष सांगीतिक कार्यक्रमों का आनन्द उठाने के लिये पर्यटक देश–विदेश से यहाँ आते

हैं।इसी वर्ष इस नगरी में संगीत के प्रभाव के कारण यूनेस्को ने इसे 'सिटी ऑफ म्यूज़िक' घोषित किया है।

इसके अतिरिक्त सारनाथ, श्री काशी विश्वनाथ, संकटमोचन, कालभैरव, दुर्गामंदिर, मणि कर्णिका तीर्थ आदि दर्शनीय स्थलों के दर्शन हेतु भी प्रति वर्ष सैलानी काशी यात्रा को आते हैं।सर्व विद्या की राजधानी के रूप में विख्यात काशी नगरी में पर्यटकों के आने का एक और कारण संगीतकला को सीखने और आत्मसात करने काभी है। इसके लिये भी प्रति वर्ष हजारों की संख्या मे ंविदेशी सैलानी यहाँ आते हैं और यहाँ रहकर श्रेष्ठ गुरूजनों से गीत, वाद्य और नृत्य की शिक्षा लेते हैं। यहाँ का रमणीय भौगौलिक परिवेश गंगा का तट, अल्हड़ मस्तअंदाज़, बनारसी लस्सी, ठंडई, चाट, बनारसी साड़ी, विविध मन्दिर और सांस्कृतिक विविधताऐं आदि के कारण भी पर्यटकों को यह नगरी विशेष रूप से भातीहै।